प्रत्येक शासक विधानों, न्यायालयों और करारोपण को राष्ट्रीय आधार पर स्थापित कर रहा था किन्तु पोप चर्च के विधानों, अदालत का प्रशासन और चर्च के करों का संग्रह अन्तर्राष्टीय आधार पर करता था, जिसे शासक अपने अधिकारों के विरुद्ध समझते थे। वे चाहते थे कि चर्च के अधिकारियों समेत सभी अभियुक्तों पर राष्ट्रीय न्यायालयों में मुकदमें चलाये जायें। शासक अपनी पूर्ण सत्ता चाहते थे इसलिये पोप के प्रति उनके मन में कटुता थी।

तात्कालिक कारण–चर्च के व्यय अत्याधिक होने के कारण चर्च ने वैध व अवैध, उचित तथा अनुचित उपायों एवं साधनों द्वारा धन वसूल करना आरम्भ कर दिया। धर्म सुधार आन्दोलन का तात्कालिक कारण था-पोप के अधिकृत पदाधिकारी, टेटजेल द्वारा जर्मनी में "पाप-मोचन पत्रों" अथव 'अनुग्रह-पत्रों' (इन्डल्जेन्सेज) का विक्रय। जब सन् 1517 में टेटजेल नामक पोप का एजेन्ट जर्मनी के विटनबर्ग में 'पाप मोचन पत्रें' को खुलेआम बेचने लगा तो मार्टिन लूथर ने अपने प्रसिद्ध '95 प्रसंगों' द्वारा इसका डटकर विरोध किया और पोप के विरुद्ध विद्रोह का झण्डा खड़ा किया। लूथर ने इस तथ्य पर जोर दिया कि धन लेकर मोक्ष प्राप्त नहीं किया जा सकता है अपितु पापों से मुक्ति के लिए ईश्वर की असीम दया की आवश्यकता है। उसने 'श्रद्धा द्वारा दोष मुक्ति ' का सिद्धांत प्रतिपादित किया। उसका विश्वास था कि यदि मनुष्य अपने पापों के लिए खेद प्रकट करता है और ईश्वर में विश्वास रखता है तो वह पाप-मोचन पत्रें के बिना भी क्षमा कर देगा।

प्रमुख धर्म सुधारक

चौदहवीं शताब्दी से ही सुधारवादियों का यूरोपीय धार्मिक मंच पर आगमन हो गया था। उन्होनें चर्च के संगठन के दोषों एवं पादरी जीवन में विद्यमान अनैतिकता का विरोध किया तथा परिवर्तन की मांग की। प्रारम्भिक सुधारकों ने आगे चलकर मार्टिन लूथर जैसे सुधारकों के लिए सशक्त पृष्ठभूमि तैयार की।

जान वाइक्लिफ (1320-1384)ई०–वाइक्लिफ ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय का एक प्राध्यापक था। उसने कैथोलिक धर्म की बहुत सी परम्पराओं तथा चर्च के क्रियाकलापों की आलोचना की। उसने घोषित किया, "पोप पृथ्वी पर ईश्वर का प्रतिनिधि नहीं है तथा भ्रष्ट एवं विवेकहीन पादरियों द्वारा दिये जाने वाले धार्मिक उपदेश व्यर्थ हैं।" उसका कहना था कि प्रत्येक ईसाई को बाइबिल के सिद्धांतों के अनुसार काम करना चाहिए और इसके लिये चर्च या पादरियों के मार्ग निर्देशन की आवश्यकता नहीं है। वाइक्लिफ ने इस बात की वकालत की कि आम लोगों को इस बात का ज्ञान होना चाहिये कि धर्मग्रन्थ में क्या लिखा है। यह ध्यातव्य है कि कैथोलिक चर्च की भाषा अब तक लैटिन थी, जिसे आम लोग नहीं समझ पाते थे। वह जन भाषाओं में धर्मग्रंथों के अनुवाद के पक्ष में था। उसी की प्रेरणा के फलस्वरूप बाइबिल का प्रथम अंग्रेजी अनुवाद हुआ। उसने यह भी मांग की कि चर्च की विपुल धन-सम्पत्ति पर राज्य को अधिकार कर लेना चाहिये। उसके विचार एक सीमा तक क्रान्तिकारी थे, जिन्हे रूढ़ीवादी धर्माधिकारी सहन नहीं कर पाये। धर्माधिकारियों और शिक्षा शास्त्रियों दोनों ने ही उसके विचारों का विरोध किया। किन्तु वे उसके विचारों के प्रसार को रोकने में असफल रहे। उसे 'द मार्निंग स्टार आफ रिफॉर्मेशन' कहा गया।

जॉन हस (1369-1415)ई०-हस बोहेमिया (चेक) का निवासी था और प्राग विश्वविद्यालय में प्रोफेसर था। उसके विचारों पर वाइक्लिफ का गहरा प्रभाव था। उसकी मान्यता थी कि एक सामान्य ईसाई, बाइबिल के अध्ययन से ही मुक्ति का मार्ग खोज सकता है ओर इसके लिए चर्च आदि के सहयोग की आवश्यकता नहीं हैं। चर्च की निन्दा और नास्तिकता का प्रसार करने के आरोप में उसे जिन्दा जला दिया गया। उसके विचारों का बोहेमिया के जन-जीवन पर जबरदस्त प्रभाव पड़ा।

सेवोनारोला(1452-1488)ई०-वह फ्लोरेन्स नगर का एक विद्वान पादरी तथा राजनीतिज्ञ था। उसने पोप के राजसी ठाट की आलोचना की तथा चर्च के क्रियाकलापों में सुधार पर जोर दिया। तत्कालीन पोप एलेक्जेण्डर षष्ठम् ने उसे अपने विचारों का प्रचार बंद करनेका आदेश दिया, जिसका उसने पालन नहीं किया। इस पर चर्च ने उसे चर्च की महान्-परिषद के सम्मुख स्पष्टीकरण के लिए बुलाया और चर्च की निन्दा करने के आरोप में उसे भी जिन्दा जला दिया गया।

इरेसमस (1466-1536)ई०–हॉलैण्डवासी इरेसमस विचारों की गहनता एवं सुन्दर लेखन शैली के कारण शीघ्र ही यूरोप में विख्यात विद्वान बन गया। लूथर के द्वारा धर्म सुधार आन्दोलन प्रारम्भ होने से पहले ही 1511 ई. में उसने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'द प्रेज ऑफ फौली' लिखी। इस पुस्तक के द्वारा उसने लोगों का ध्यान सहज ही चर्च की बुराईयों की तरफ खींचा। इस पुस्तक में भिक्षुओं की अज्ञानता एवं उनके सहज विश्वास की आलोचना की गयी। यद्यपि वह लूथर की तरह

उग्रवादी नहीं था परन्तु अपनी पुस्तक में प्रहसनों के माध्यम से पोप की कहीं अधिक खिल्ली उड़ाई। इरेसमस ने ईसाई धर्म के मूल-सिद्धांतों के प्रचार हेतु 'न्यू टेस्टामेंण्ट' का 1516 ई. में नया संस्करण निकाल कर धर्म की उत्पत्ति की व्याख्या की।

मार्टिन लूथर (1483-1546)—लूथर का जन्म 10 नवम्बर, 1483 को जर्मनी के एक निर्धन किसान परिवार में हुआ। इरफर्ट विश्वविद्यालय से शिक्षा ग्रहण करने के बाद उसने पिता की इच्छा पर कानून का अध्ययन प्रारम्भ किया। किन्तु कानून की जगह उसने धर्म शास्त्र का अध्ययन शुरू कर दिया। उसका मन उद्वेलित रहने लगा। तरह-तरह की शंकाएं उठने लगीं। विटनबर्ग विश्वविद्यालय में धर्म शास्त्र का प्रोफेसर नियुक्त हो जाने पर शंकाओं के समाधान हेतु उसे अध्ययन का और मौका मिला। 1511 ई. में उसने रोम की यात्रा की। पोप के नैतिक पतन को देखकर उसे निराशा हुई।

लूथर प्रारंभ में पोप का विरोधी नहीं था परन्तु 1517 ई. में अचानक एक घटना, टेटलेज को सेन्ट पीटर गिरजाघर के निर्माण हेतु क्षमा-पत्र बेचकर धन इकट्ठा करने के पोप की आज्ञा, ने लूथर को चर्च का विरोधी बना दिया। टेटजेल कहता था, "जैसे ही क्षमा-पत्रों के लिए दिये गये सिक्कों की खनक गूंजती है, उस आदमी की आत्मा, जिसके लिये धन दिया गया है, सीधे स्वर्ग में प्रवेश कर जाती है।" परन्तु ऐसी बातों पर से विश्वास उठ रहा था। क्षोभ हर ओर व्याप्त था लेकिन मार्टिन लूथर अकेला आदमी था जिसने साहस बटोरकर भोली-भाली जनता के साथ किये जा रहे मजाक और शोषण का विरोध किया। उसने कहा कि यह धर्म के मूलसिद्धात की अवहेलना है। लूथर का विचार था कि पाप पश्चाताप से नष्ट होता है, पश्चाताप मन का विषय है और चर्च के कर्मकाण्डों से उसका कोई सम्बन्ध नहीं है। लूथर ने इस प्रथा के विरोध में विटनबर्ग के कैसल गिरजाघर के प्रवेश-द्वार पर 31 अक्टूबर, 1517 को अपना विरोध-पत्र ' द नाइन्टी फाईव थीसिस' लटका दिया। इन 95 स्थापनाओं अथवा कथनों में चर्च द्वारा सभी उपायों से धन एकत्र करने की आलोचना की गयी थीं। ये बातें पहले लैटिन में लिखी गयी लेकिन शीघ्र ही उनका जर्मन अनुवाद हुआ। इन स्थापनाओं की प्रतियाँ उसने अन्य नगरों में अपने मित्रों को भेजी। लूथर अभी भी चर्च के अधिकार को खुली चुनौती नहीं दे रहा था लेकिन पोप ने लूथर के विरोध का विशेष महत्व नहीं समझा।

लूथर ने 1519 ई. में लिपजिक में एक खुले वाद-विवाद में मनुष्य और ईश्वर के बीच पोप की सहायता को निरर्थक बताया तथा जॉन हस के विचारों को स्वीकार करने का आहवान किया। यह चर्च की निरकुंश सत्ता पर लगाया गया आक्षेप था जिसके परिणाम भी गंभीर हो सकते थे। इस बीच उसने तीन लघु पुस्तिकाएँ (पेम्फलेट) प्रकाशित किये। इन पुस्तिकाओं में उन मूलभूत सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया जिन्हें आगे चलकर 'प्रोटेस्टेन्टवाद' के नाम से अभिहित किया गया। 'एन एड्रेस टु द नोबिल्टी ऑफ द जर्मन नेशन' (जर्मन राष्ट्र के सामन्तवर्ग के प्रति एक अपील) में उसने चर्च की अपार सम्पत्ति का वर्णन करते हुए जर्मन शासकों को विदेशी प्रभाव से मुक्त होने के लिए प्रेरित किया। 'द बेबीलोनियन केप्टिविटी ऑफ द चर्च' (चर्च की बेबीलोनियायी कैद) में उसने पोप ओर उसकी व्यवस्था पर प्रहार किया। 'द फ्रीडम ऑफ क्रिश्चियन मेंन' (एक ईसाई मनुष्य की मुक्ति) में उसने मुक्ति के सिद्धांतो का प्रतिपादन किया और ईश्वर की अनुकम्पा पर अटूट विश्वास की प्रतिष्ठा की। इन्हीं लघु पुस्तिकाओं में प्रतिपादित सिद्धांत आगे चलकर प्रोटेस्टेन्टवाद के आधारभूत तत्व बने।

लूथर के कार्यों से पोप क्षुब्ध हो गया। 1520 में पोप ने लूथर को आदेश दिया कि वह 60 दिन के भीतर अपने विचार वापस ले अन्यथा उसे धर्मद्रोही घोषित कर दिया जायेगा। परन्तु लूथर ने आदेश की परवाह नहीं की। उसने पोप के आदेश को एक सार्वजनिक सभा में जला दिया। अन्ततोगत्वा लूथर को धर्म से निष्कासित कर दिया। इस अवधि में उसका मित्र सैक्सनी का शासक उसका संरक्षक रहा। जर्मनी के अनेक शासक चर्च विरोधी थे। अतः लूथर को धर्म से बहिष्कृत किया गया तो उसे कोई क्षति नहीं हुई। रोम के पवित्र साम्राज्य का अध्यक्ष चार्ल्स पंचम यद्यपि पोप का समर्थक था परन्तु वह युद्धों में इतना उलझा हुआ था कि बढ़ते हुए धार्मिक असंतोष को कुचलने में असमर्थ रहा। दूसरी ओर मार्टिन लूथर ने आन्दोलन को सफल बनाने के लिए अथक प्रयास किया तथा भाषणों, लेखों एवं पत्रिकाओं द्वारा समाज के सभी वर्गों में जागृति उत्पन्न की। लोगों में जागृति का कारण केवल चर्च और संगठन के दोष ही नहीं थे बल्कि चर्च की सम्पत्ति के प्रति लालच भी था। इस जागृति में छापेखाने के आविष्कार से भी काफी मदद मिली। 1521 में जर्मनी की शाही संसद ने उसकी भर्त्सना की, किंतु जागरण का विस्तार इतना हो गया था कि अब भर्त्सना का कोई अर्थ नहीं रह गया था। इस जागरण में शहरी मध्यवर्ग के विभिन्न समूहों तथा दस्तकारों की भूमिका सबसे प्रमुख थी।